दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट–1
(प्रश्न पत्र–I)

DTVF / OPT-23 **HL-2301**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Praduman kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 25/06/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	1	1	4	9	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

अमीर खुसरो का असल नाम अबुल हसन था ये 14 वीं शताब्दी के प्रख्यात कवि थे तथा ये उस समय जो भाषा का प्रयोग कर रहे थे वो आधुनिक खड़ी बोली के समान थी जिसे इसका शुक्ल जी ने भी कहा है- "क्या उस समय भाषा खिलकर इतनी चिकनी हो गई थी जितना खुसरो की पहेलियों में है"।

खुसरो के साहित्य में खड़ी॰ का प्रभाव साफ नजर आता है।

"एक थाल मोती से भरा सबके सर औंधा धरा
चारों ओर यह थाल फिरे मोती इससे एक न गिरे"

एक ~~अन्य~~ उदाहरण में बरन, सो इद्दु ब्रजभाषा के शब्दों को छोड़कर शेष खड़ी बोली का ही प्रयोग है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

"खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग
मन मेरा मन पीउ को दोऊ भए एक रंग"
— खड़ी मिश्रित

खुसरो के पंक्तियों को पढ़कर पाठक सहज ही समझ जाता है कि यह खड़ीबोली का प्रयोग है।

"खुसरो दरिया प्रेम का उल्टी वाको धार
जो उतरा सो डूब गया जो डूबा सो पार"

अतः अमीर खुसरो ने अपने साहित्य में पर्याप्त प्रयोगधर्मिता का परिचय दिया है तथा अपने समय की एवं भाषिक प्रवृत्तियों का सुन्दर समन्वय किया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के समय एक धारा ओर चल रही थी जो हिन्दी भाषा के प्रसार-प्रचार पर ध्यान केन्द्रित कर इसे राष्ट्रीय भाषा बनाना चाहती है जिसमें गांधी जी, लाला जी तथा तिलक जैसे नाम प्रमुख हैं।

बाल गंगाधर तिलक स्वदेशी के प्रबल समर्थक थे जो उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व में भी दिखता है यही स्वदेशिकता उनकी भाषा के स्तर पर भी थी उनका विश्वास जाता है।

"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हम इसे लेकर रहेंगे"

बाल गंगाधर तिलक जी ने "केसरी" पत्र का संपादन भी किया है जिसके माध्यम से उन्होंने हिन्दी के प्रसार-प्रचार में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उनका मानना था कि हिन्दी ही हिंदुस्तान ही राष्ट्रभाषा होनी चाहिए।

अतः बाल गंगाधर तिलक जी ने अपने स्वाधीनता आन्दोलन के साथ हिन्दी के प्रचार को भी लक्ष्य बनाया तथा "होम रूल" के माध्यम से स्वदेशी भाषा में शिक्षा की वकालत की।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

पुरुषोत्तमदास टंडन जी को हिन्दी का प्रहरी कहा जाता है। टंडन जी ने हिन्दी के प्रचार में अभूतपूर्व योगदान दिया तथा पूरा जीवन हिन्दी के प्रचार में लगा दिया।

टंडन जी हिन्दी को लेकर इतने प्रतिबद्ध थे कि गांधी जी भी इनसे प्रेरित होकर हिन्दी के विकास और प्रचार में लग गये।

लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद हिन्दी सभामण्डल का अध्यक्ष टंडन जी को बनाया गया जिसके माध्यम से इन्होंने हिन्दी के विकास में योगदान दिया। इन्हीं के प्रयासों हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन होना प्रारम्भ हुआ।

टंडन जी का मानना था- "मैं हिन्दी के प्रचार प्रसार को राष्ट्रीयता का अंग मानता हूँ तथा हिन्दी राष्ट्रभाषा बने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

के सारे गुण रखती है यह ऐसी भाषा है जिससे हम अपनी विचारों को स्पष्टतापूर्वक व्यक्त कर सकते है

टंडन जी के हिन्दी के प्रति लगाव के कारण ही इन्हें हिन्दी का प्रहरी कहा जाता है तथा हिन्दी के विकास में इनका योगदान अविस्मरणीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

रहीम का पूरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना था ये अकबर के दरबारी ~~कवि~~ सेनापति थे। किन्तु इनकी ख्याति इनके साहित्य के कारण अधिक है। इन्होंने कृष्ण भक्ति पर साहित्य रचा है

रहीम खुसरो के बाद ऐसे कवि थे जिनके साहित्य की भाषा, आधुनिक खड़ीबोली के समान था - जैसे

"रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून
पानी बिना न ऊबरे, मोती मानुस चून"

रहीम मुख्यतः ब्रजभाषा के कवि है तथा खड़ीबोली का प्रयोग इन्होंने शाब्दिक स्तर पर किया है न कि व्याकरणिक स्तर पर अतः इनके साहित्य में खड़ी ब्रज मिश्रित रूप में आते है।

"रहिमन ओछे नरन सो, बैर भलो न प्रीत
काटे चाटे स्वान के, दूहूं भांति विपरीत"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रहीम की रचना मदनाष्टक में इन्होंने शाब्दिक तथा व्याकरणिक दोनों स्तर पर खड़ी का प्रयोग किया है।

मदनाष्टक पंक्ति :

"पकरि परम प्यारे, साँवरे को मिलावो
असल अमृत प्याला क्यों न मुझको पिलावो"

अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि रहीम ने भाषिक स्तर पर अद्भुत प्रयोग-धर्मिता का परिचय दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'मारवाड़ी' बोली

"मारवाड़ी" राजस्थान में बोली जाने वाली राजस्थानी भाषा की प्रसिद्ध उपबोली है जिसकी लिपि देवनागरी ही है तथा यह राजस्थान, हरियाणा, गुजरात तथा पूर्वी पाकिस्तान के कुछ क्षेत्रों में बोली जाती है।

मारवाड़ी समाज द्वारा इसके विकास के लिए इसको संविधान की 8वीं अनुसूची में रखने की मांग की जाती है किन्तु अभी ऐसा नहीं हुआ है अभी यह स्थानीय स्तर पर ही है।

भाषिक प्रवृत्ति

* इसमें प्रायः का लोप हो जाता है।
  कहयो > कयो
* च, छ के स्थान पर प्रायः स का प्रयोग देखने को मिलता है।
  चकवी > सकवी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* ए, औ का प्रयोग इसमें अई तथा अउ रूप में देखने को मिलता है।

* इसकी कारक व्यवस्था भी हिन्दी कारक व्यवस्था भिन्न रूप की है

मारवाड़ी बोली

राजस्थान की स्थानीय बोली है जो अपनी अलग सामाजिक प्रवृत्तियों बल पर अलग पहचान बनाये हुए है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

1915 ई० में महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये तथा आते ही गाँधी जी हिन्दी तथा हिन्दुस्तान को समझने में लग गये। स्वाधीनता आन्दोलन में केन्द्रीय भूमिका निभाने के साथ-साथ गाँधी जी हिन्दी के प्रचार के लिए भी जीवनपर्यन्त सक्रिय रहे। इनके हिन्दी के प्रति समर्पण देखते हुए रामविलास शर्मा ने कहा है- "हिन्दी के विकास एवं प्रचार में जितना योगदान गाँधी जी ने किया है उतना किसी और नेता, पार्टी या संस्था ने नहीं किया"।

* गाँधी जी टंडन जी से प्रेरित होकर हिन्दी के विकास में जुट गये।

* गाँधी जी ने न तो राजा लक्ष्मण सिंह वाली संस्कृतनिष्ठ भाषा का समर्थन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किया न कि राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द वाली फारसीनिष्ठ भाषा का। वे तो हिन्द में उर्दू वाली हिन्दुस्तानी शैली का समर्थन किया जिससे प्रभावित होकर तत्कालीन लेखक जैसे- प्रेमचंद ने भी अपने साहित्य में गांधी जी के सपनों की हिन्दुस्तानी को अपनाया।

* गांधी जी का मानना था जब तक हमारी एक भाषा नहीं होगी हम एक सूत्र में नहीं बंध सकते तथा वे कहते थे कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात राष्ट्रीयता की बात है।

* इसी परिपेक्ष्य में गांधी जी ने 1918 के इन्दौर अधिवेशन में हिन्दी के दक्षिण भारत में प्रचार को लेकर योजना बनाई तथा अपने पुत्र देवदास को दक्षिण भारत भेजा।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* 1927 में मद्रास में गठित हुई दक्षिण भारत प्रचार समिति गांधी के प्रयासों से ही बन सकी तथा इस समिति ने हिन्दी के प्रचार में अभूतपूर्व कार्य किया जिस कारण केन्द्र सरकार ने भी इसको विशेष महत्व की समिति का दर्जा दिया।

* गांधी के प्रयासों से ही 1925 के बाद कांग्रेस के अधिवेशन के साथ हिन्दी का सम्मेलन भी आयोजित होने लगा जिससे हिन्दी के विकास में और गति मिली।

* गांधी जी के प्रयासों तथा हिन्दी प्रति प्रतिबद्धता को देखकर देश का युवा वर्ग एवं अन्य राष्ट्रीय नेता भी हिन्दी के प्रचार प्रसार की मुहिम में

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पूरी एकाग्रता से जुट गये।

गाँधी जी का हिन्दी के प्रति प्रेम सराहनीय था तथा वे स्वतंत्रता तथा हिन्दी के विकास को एक साथ लेकर चले तथा दोनों में ही उन्होंने असफलता पाई। उनके इन्हीं कृत्यों वजह से वे हमेशा याद किये जाते रहेंगे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

कोई भी भाषा जब परिष्कृत रूप धारण कर लेती है तो वह अपने मानक स्वरूप को प्राप्त कर लेती है जैसे वर्तमान में हिन्दी अपने मानक स्वरूप में है। जिसकी लिपि देवनागरी है।

अपभ्रंश से पहले की भाषा पालि, तथा प्राकृत एवं संस्कृत में एकवचन व बहुवचन के अतिरिक्त कहीं-कहीं द्विवचन का भी प्रयोग होता था तथा ब्रजभाषा में भी द्विवचन के प्रयोग के उदाहरण मिलते हैं।

वर्तमान में हिन्दी को दो वचन है-

(i) एकवचन

(ii) बहुवचन.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

एकवचन - जब किसी शब्द से वाक्य के एकल होने का पता चले तो वह एक वचन कहलाता है।
जैसे - राम अच्छा लड़का है
• यह एक अच्छा विद्यार्थी है।

बहुवचन - जब वाक्य में एक से अधिक होने का पता चले तो इसे ~~इस~~ बहुवचन कहते है।
* बच्चे शोर मचा रहे है।
* अनेक बच्चे सुन्दर होते है।

हिन्दी की मानक संरचना में द्विवचन का लोप हो गया है तथा सिर्फ एकवचन व बहुवचन शेष बचे है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कबीरेतर संतकवियों के साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वरूप का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

15- 17 वी शताब्दी का काल भक्तिकाल का काल था जिसमें तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास जैसे कवि रहे। इसी काल की एक धारा थी संतकाव्यधारा जिसका प्रतिनिधित्व कबीरदास जैसे कवि कर रहे थे।

भक्तिकाल की संतकाव्यधारा के कवि कबीर प्रख्यात थे जिन्होंने सामाजिक विद्रूपताओं पर चोट की। इनके साहित्य की अद्भुत व विशेषता था इनके साहित्य में खड़ीबोली की झलक हालांकि यह सूक्ष्म स्तर पर रही तथा इसका साफ प्रभाव कबीरेतर साहित्य में देखने को मिला।

"जो बिछड़े हैं पियारे से भटके दर-बदर फिरते
हमारा यार है हममें हमको इंतजारी क्या"

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कबीरेतर काल में संत काव्यधारा के कवियों में खड़ी बोली का साफ प्रयोग दिखता है जिसमें समझने में बिल्कुल कठिनता उत्पन्न नहीं होती एवं यह आधुनिक खड़ी बोली के समान दिखता है।

"अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम"
मलूकदास

उपर्युक्त पंक्ति में खड़ीबोली का साफ प्रयोग दिखता है रीतीकालीन अन्य सन्त कवि, दरिया, पलटू आदि की बल रूप में महत्वपूर्ण है दरिया जी का उपर्युक्त उदाहरण -

"जात हमारी ब्रह्म है मात पिता है राम
गिरिह हमारा सुन्न है अनहद मे बिसराम"
दरिया

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उपर्युक्त आवृत्ति में भाषा संबंधी दुरुहता नही आती है।
अतः संत कवियों ने भक्ति की भाविक प्रवृत्तियों को अपने साहित्य में स्थान दिया है तथा यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि वर्तमान खड़ीबोली में संत काव्य धारा के कवियों की प्रेरणा विद्यमान रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत की बहुसंख्यक आबादी द्वारा बोले जाने वाली भाषा हिन्दी है तथा प्रयुक्त लिपि देवनागरी है। जो कुटलाक्षर लिपि से होते हुए ब्राह्मी लिपि की विशेषताओं को धारण करते हुए देवनागरी रूप में विकसित हुई है।

हालांकि देवनागरी लिपि की भाषिक स्तर पर अपनी कुछ सीमाएं है जो इसे वैश्विक भाषा बनने में बाधा के रूप में देखी जाती है।

* देवनागरी लिपि के शब्द कठिन है तथा सीखने हेतु परिश्रम लाज़्य है जिस कारण अहिन्दी भाषी द्वारा इसको सीखने में कठिनाई आती है
* लिपि देवनागरी की वर्णमाला काफी बड़ी जिससे इसके टंकण में समस्या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आती है तथा परिणाम स्वरूप यह कम्प्यूटर पर सीमित प्रयोग की जाती है।

* भ्रामक शब्द - कुछ शब्द भ्रामक है जिनके आपस में जुड़ जाने या जुड़े होने का भ्रम रहता है। जैसे र व > ख, भ, म, ध व ब आदि।

* शिरोरेखा - शिरोरेखा के कारण समस्या का भाव होता है अतः लेखन में समस्या उत्पन्न होती है।

* अनावश्यक शब्द - कुछ अनावश्यक शब्द है जो वर्णमाला को अधिक जटिल बनाते है जिन्हे हटाने की आवश्यकता है
जैसे - ष, ङ, ण, ष आदि।

* मात्राओं में अवैज्ञानिकता - मात्राओं के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्तर पर भी अवैज्ञानिकता दिखती है कुछ मात्राएं आगे (बी) लगती है कुछ पीछे (बि), कुछ ऊपर (बे) तथा कुछ नीचे (बु) लगती है।

* अनुस्वार एवं अनुनासिक - इनमें प्रायः भ्रम सा बना रहता है तथा इनके लगाना आप छोड़ सा बन गया है जैसे-

सम्बन्ध > संबंध,

गङ्गा > गंगा

व्याकरणिक स्तर पर पर देवनागरी की कुछ सीमाएं है तथा जिसके लिये निम्न सुझाव दिये जाते है
* अनावश्यक शब्दों को हटाना
* शिरोरेखा यथा स्वरूप रहना
* अनुस्वार, चन्द्रबिंदु प्रयोग ध्यान से करना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ग्रामक शब्दों को ऊँचे से मिला दें।
जैसे रव → ख ।
अतः उपर्युक्त
सिफारिशों को ध्यान में रखकर देवनागरी को और सरल बनाया जा सकता है तथा वैश्विक स्तर पर इसकी स्वीकार्यता को बढ़ाने के लिए इसकी सीमाओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवधी' बोली का परिचय दीजिये। 15

अवधी अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई पूर्वी उपभाषा की प्रसिद्ध बोली है जो प्राचीन काल में कोसल राज्य से प्रसिद्ध क्षेत्र की बोली रही है जिसके अन्तर्गत, अयोध्या, इटावा, पूर्वी उत्तर प्रदेश मुख्य है।

सूफीकाव्यधारा - सूफी काव्यधारा में अवधी का बहुत विकास हुआ है जिसकी पहली रचना मुल्ला दाऊद की चंदायन या लोरिकहा है तथा इसे संवेदना एवं शिल्प के स्तर पर सर्वोच्चता तक पहुँचाने में मलिक मुहम्मद जायसी की रचना "पद्मावत" महत्वपूर्ण है। जिसमें संवेदना को पूरी तन्मयता साथ पेश किया गया है जिसको निम्न पंक्ति में देख सकते हैं -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"यह तन जारौ छार कै कहौ कि पवन उड़ाव।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाँव।।"

रामकाव्यधारा - रामकाव्य धारा में अवधी को एक महान कवि के रुप में गोस्वामी तुलसीदास जी मिले, जिन्हे संस्कृत का भी प्रगाढ़ ज्ञान था। तथा इन्होंने तत्सम शब्दों को उपर्युक्त अवधी में ढालकर उनका अवधीकरण कर दिया। तथा अलंकार, मुहावरों, लोकोक्ति का प्रयोग करके इसे साहित्य की शिरोमणि बना दिया।

अवधी की भाषिक प्रवृत्ति -

* संज्ञा के तीनों रुपों का प्रयोग किया जाता है।

* प्रायः ओकारांत प्रवृत्ति होती है।

* स्त्रीलिंग में वन शब्द का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किया जाता है

* अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति होती है

* ए, ओ, शब्दों अधिक प्रयोग

भक्तिकाल की सूफी काव्यधारा, रामकाव्यधारा में अवधी का विशेष योगदान है अवधी में गतिशीलता कम ठहराव अधिक होने के कारण अवधी में ज्यादा प्रबंधकाव्यों की रचना हुई हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली गद्य के विकास में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्नीसवीं शताब्दी में रीतिकाल में चर्मोत्कर्ष पर रही ब्रजभाषा अपने अस्तित्व के लिए लड़ रही थी तथा खड़ीबोली अपनी आधुनिकता के साथ अपना स्थान बना रही थी। तथा खड़ी बोली के विकास में सामाजिक-सुधार आन्दोलन, प्रेस तथा फोर्ट विलियम कॉलेज की विशेष भूमिका रही है।

फोर्ट विलियम कॉलेज - 1800 ई० में इसकी स्थापना सिविल प्रशासकों को प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से लार्ड वैलेजली ने की थी। किन्तु इसके माध्यम से हिन्दी खड़ी बोली के विकास में "योगदान" ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें इनका साथ इनके सहयोगी इंशा अल्ला खाँ, लल्लूलाल सदासुखलाल, तथा सदल मिश्र ने की। इन्हीं के माध्यम से खड़ी बोली का विकास हुआ।

इंशा अल्ला खाँ :- फोर्ट विलियम कॉलेज द्वारा दिये गये कार्य में इन्होंने फारसी प्रभाव को ज्यादा बढ़ावा दिया अर्थात इन्होंने राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द वाली फारसीनिष्ठ भाषा पर बल दिया।

लल्लूलाल - लल्लू लाल ने फारसी कृत भाषा शब्दों का उपयोग नहीं किया वरन् इन्होंने ब्रजभाषा को खड़ी बोली में अधिक समावेश किया।

सदल मिश्र - बिहार के निवासी होने के कारण इनकी भाषा में पूर्वी प्रयोग अधिक दिखाई देते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सदासुखलाल :- इन्होंने परिपक्व हालते अपनाते हुए पूर्वी तथा पश्चिमी बोलियों का खड़ी बोली में समन्वय किया है।

अतः फोर्ट विलियम कॉलेज में "ग्रियर्सन" तथा उनके सहयोगियों ने खड़ी बोली को गद्य के विकास के रूप में प्रयुक्त कर इसे आधुनिक भारतीय भाषा बनाने के मार्ग की पृष्ठभूमि तैयार की।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

12-13 वी शताब्दी में सिद्धों ने अपनी मान्यताओं का प्रचार करने हेतु जिस लोक भाषा/मान्यताओं, प्रवृत्तियों का प्रयोग था जो साहित्य रचा उसे सिद्ध साहित्य कहते हैं।

सिद्धों की बोली प्रायः पंचमेल थी अर्थात कई क्षेत्रों की भाषा से मिलकर बनी भाषा। अतः इनके साहित्य में सम्पूर्ण भाषिक प्रवृत्तियों के साथ-साथ खड़ी बोली का भी स्वरूप दिखता है हालांकि वह प्रारंभिक स्तर पर है जैसे

"घर ही बइसी दीवा जाली
कोणहि बइसी घंटा चाली"

उपर्युक्त पंक्ति में खड़ी बोली स्वरूप दिखता है।

आगे सिद्धों में इस तरह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सिद्धों ने अपने स्तर पर खड़ी बोली की सूक्ष्म प्रवृत्ति को उद्घाटित किया है।

"जोगी सोई जाणीये, जग ते रहे उदास
तत निरंजन पाइये कहे मच्छन्दरनाथ"

अतः सिद्धों के साहित्य में खड़ी बोली के सूक्ष्म प्रवृत्ति देखी जाती है हालांकि यह अन्य काव्यधाराओं में प्रयुक्त हुए खड़ीबोली से कम है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

कन्नौजी बोली प्रायः कन्नौज क्षेत्र फर्रुखाबाद की बोली है जिसमें कानपुर, हरदोई, पीलीभीत जैसे क्षेत्र आते है। कुछ आलोचकों ने इसे ब्रजभाषा ही बताया है हालांकि ग्रियर्सन ने इसे ब्रजभाषा से अलग एक स्वतंत्र बोली माना है।

हालांकि कन्नौज बोली का ब्रजभाषा से निकटता से संबंध होने के कारण इसकी भाषिक प्रवृत्तियों में भी ब्रजभाषा जैसे गुण दिखते है।

भाषिक प्रवृत्ति

* संज्ञा के एक ही रूप का प्रयोग
* ए, औ जैसे शब्दों बहुतायत
* स्त्रीलिंग बनाने के लिए इ, इया का प्रयोग होता है।
* ण का प्रयोग नही, न का प्रयोग होता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

* विशेषण लिंग के अनुसार बदलता है।

* कहीं-कहीं अल्पप्राणीकरण तथा कहीं-कहीं महाप्राणीकरण दिखता है।

अतः कन्नौजी बोली अपनी भाषिक प्रवृत्तियों में अनूठी विशेषताओं के कारण प्रख्यात है तथा इसका ब्रजभाषा से निकटता से संबंध है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) विकारी और अविकारी पद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विकारी शब्द वे होते हैं जिनका विकार हो जाता है अर्थात जो पद लिंग, वचन तथा क्रिया के कारण बदल जाते हैं उन्हे विकारी पद कहते है जैसे- बूढा, बूढापा एवं बूढिया।

विकारी पदों को परिवर्तन करने भूमिका निभाने वाले तत्व -

विकारी पद -

① संज्ञा
② सर्वनाम
③ क्रिया
④ विशेषण

अविकारी तत्व वे होते है जो किसी भी परिस्थिति में नहीं बदलते

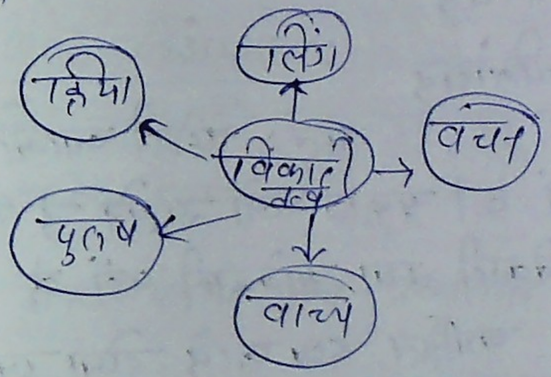

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अर्थात यह अपरिवर्तनीय होते है।
जैसे- धीरे-धीरे यह लौट सकता रहेगा इसे धीरे-धीरे या धीरा-धीरा नहीं लिखा जा सकता

अविकारी पद:
- क्रियाविशेषण
- सम्मुच्चयबोधक
- सम्बन्धबोधक
- विस्मयादिबोधक

अत: हिन्दी व्याकरण में शब्दों की प्रकृति को समझने के लिए इन्हे विकारी तथा अविकारी पदों के रूप में वर्गीकृत करके देखा जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताएँ

ब्रजभाषा शौरसैनी अपभ्रंश से विकसित हुई पश्चिमीहिन्दी की बोली है जिसका क्षेत्र ~~ब्रजमण्डल~~ ब्रजमण्डल है जिसमें फैजाबाद, आगरा, दिल्ली NCR के क्षेत्र आते है तथा यह अष्ट छापों का साहित्यिक क्षेत्र भी रहा है।

व्याकरणिक विशेषताएं:-

* इसमें संज्ञा के एक रूप का ही प्रयोग किया जाता है।
* इसकी प्रवृत्ति प्राय: उकारान्त होती है।
* ण के स्थान पर न का प्रयोग होता है
* ड़ विभक्ति के का आधिक प्रयोग
* ऐ, औ का बहुतायत प्रयोग
* वर्तमान, भूतकाल तथा भविष्य के लिए प्राय (त रूप, य रूप तथा ह रूप)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* स्त्रीलिंग के लिए ई, इयाँ प्रयोग
* शब्दों का अल्पप्राणीकरण करने की प्रवृत्ति

अतः ब्रजभाषा अपनी विशेष भाविक प्रवृत्ति के बल पर ही रीतिकाल की सर्वोच्च भाषा रही तथा भक्तिकाल में भी बहुत उपयोगी रही। कृष्णभक्ति काव्यधारा में इसका अच्छा विकास हुआ है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत में व्याकरण लेखन की समृद्ध परम्परा रही प्राचीन काल में संस्कृत के व्याकरण अष्टाध्यायी हो या आधुनिक कामताप्रसाद गुरु कृत व्याकरण हो इसमें में अगला चरण केलॉग का आता है जिनके व्याकरण की निम्न विशेषताएं है

* केलॉग ने अपने व्याकरण में हिन्दी के साथ उर्दू को भी अपनाया है।
* केलॉग ने ब्रजभाषा तथा अवधी को महत्वपूर्ण मानते हुए इसे भी अपने व्याकरण में जगह दी है।
* अवधी तथा ब्रज के अलावा इन्होंने अनेकों बोलियों के शब्दरूपों तथा धातु रूपों को भी ग्रहण किया है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

* इनकी इनके व्याकरण के उदाहरण में मौलिकता है क्योंकि इन्होंने यूरोपीय लेखकों की हिंदी पुस्तकों से उदाहरण नहीं लिये।

भारत की समृद्ध व्याकरणिक परम्परा में केलॉग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा आधुनिक हिंदी की व्याकरणिक समस्याओं का निराकरण किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अवधी अर्द्धमागधी मागधी अपभ्रंश से विकसित हुई पूर्व उपभाषा की महत्वपूर्ण बोली है जो अयोध्या, पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रयोग की जाती रही है। यह क्षेत्र प्राचीन काल में कोसल नाम से प्रसिद्ध था तथा इसी की भाषा कोसली ने अवधी के विकास की पृष्ठभूमि तैयार की है।

अवधी के विकास में प्रायः सूफी काव्यधारा का विशेष योगदान रहा है।

13-14 शताब्दी में लोक प्रचलन पर आधारित लोक कथाओं, प्रेमाख्यानों को लिखने की प्रवृत्ति रही तथा एक समय पर इन प्रेमाख्यानों के लिए दोहा तथा चौपाई रूढ़ सी हो गई। जिस कारण सूफी कवियों ने अपनी रहस्यवादी मान्यताओं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

का प्रसार प्रचार करने के लिए इन प्रेमाख्यानों को आधार बनाया जिस कारण अवधी का विकास हुआ।

अवधी के विकास में महत्वपूर्ण आधार तैयार कि मुल्ला दाऊद की रचना लोरिकहा (चंदायन) ने जो अवधी की पहली रचना भी मानी जाती है इसमें अवधी पर शाब्दिक तथा व्याकरणिक दोनो स्तरों पर प्रयोग किये गये थे।

किन्तु अवधी को भक्तिकाल में शीर्ष शिरोमणि पर पहुँचाने का असल कार्य सूफी रहस्यवादी कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने किया जिनकी विश्व प्रसिद्ध कृति "पद्मावत" थी जिसमें उन्होंने ठेठ अवधी का प्रयोग किया तथा इसे शीर्ष

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्तर पर स्थापित किया।

जायसी की "पद्मावत" की खास बात इसकी संवेदना है जिसके बल पर जायसी ने इसमें मिठास भर दी है जिससे जो भी इसे पढ़ता है अवधी को देखकर संवेदना के स्तर से भावुक हो उठता है।

पद्मावत की निम्न पंक्ति इसकी संवेदना एवं मिठास को प्रदर्शित करती है।

"यह तन जारौं छार कै
कहौं कि पवन उड़ाव,
मकु तेहि मारग उड़ि परै
कंत धरै जहँ पाव"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अत: अवधी के विकास में सूफी काव्य धारा की महान प्रेरणा विद्यमान रही है हालांकि इसको मर्यादा के स्तर पर शीर्ष पर पहुँचाने का कार्य तुलसीदास की विश्व प्रसिद्ध कृति "रामचरितमानस" ने किया है जो ठेठ अवधी में लिखी गई है। इसमें तत्सम शब्दों का अवधीकरण कर दिया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 15

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान अनेक राष्ट्रीय नेता, पार्टी तथा संस्था हिंदी के प्रचार प्रसार में लगे थे जिनमें, गांधी जी, टंडन जी, लाला लाजपत राय, राजगोपालाचारी काका कालेलकर आदि प्रमुख हैं। तथा संस्थाओं में ब्रह्म समाज, आर्य समाज तथा थियोसोफिकल सोसाइटी की विशेष भूमिका है।

* गांधी जी ने 1918 के इंदौर अधिवेशन में दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार प्रसार की योजना बनाई जिसके लिए उन्होंने अपने पुत्र देवदास को दक्षिण भारत भेजा है।

* 1927 में गांधी जी तथा उनके सहयोगियों के प्रयास से दक्षिण भारत प्रचार समिति मद्रास का गठन किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिसका उद्देश्य दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार को सुनिश्चित करना था। इस संस्था ने इस कार्य में अभूतपूर्व ~~भौगोलीय~~ कार्य किया। जिसके लिए केन्द्र सरकार ने भी इसे विशेष महत्व की संस्था माना है तथा पुरस्कृत किया है।

थियोसोफिकल सोसाइटी - की अध्यक्षा एनी बेसेंट 1893 में भारत में आई थी तभी से वे इसके सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास में लग गयी है इसी क्रम में इन्होंने 1918 से 1921 तक दक्षिण भारत में तमिलनाडु सहित हिंदी के प्रचार में विशेष योगदान दिया - इनका मानना था कि "हिंदी विश्व की किसी भी भाषा से कमतर नहीं है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान पूरे भारत में हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बनाने की मुहिम चली थी जिसका कारण राष्ट्रीय नेताओं तथा संस्थाओं द्वारा अहिंदी भाषी क्षेत्रों - यथा दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार के कारण संभव हुआ है जिस कारण आज भी दक्षिण भारत के लोग हिंदी को बोल तथा पढ़ सकते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) व्याकरण के धरातल पर हिंदी की विभिन्न बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी एक व्यापक अवधारणा है जिसमें अनेकों उपभाषा, तथा बोलियाँ आकर मिलती है जैसे पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, ब्रजभाषा भाषा, अवधी, खड़ी बोली, कन्नौजी आदि। इन सभी बोलियों में कहीं न कहीं पारस्परिक संबंध नजर आता है।

पूर्वी हिन्दी - पूर्वी हिन्दी में अवधी, छत्तीसगढ़ी तथा बघेली आती है जैसा मायके समन्वय इन तीनों बोलियों में ऐसा किसी अन्य बोलियों में नजर नहीं आता है

पारस्परिक संबंध

* इसमें प्रायः ओकारांत उच्चारण की प्रवृत्ति होती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

* इ, इन का प्रयोग स्त्रीलिंग बनाने में किया जाता है।
* संज्ञा के तीनों रूपों का प्रयोग देखने को मिलता है, लरिका, लरिकवा, लरिकउना।
* अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति
* ए, ओ, आ शब्दों बहुतायत प्रयोग

पश्चिमी हिन्दी - पश्चिमी हिन्दी में ब्रजभाषा, खड़ीबोली, कन्नौजी, तथा हरियाणवी आती है हालांकि इनमें उतनो संबंध नहीं है जैसा पूर्वी भाषा की बोलियों में नजर आता है

* ब्रजभाषा तथा कन्नौजी में प्रायः समानता देखने मिलती है।
* खड़ीबोली तथा हरियाणवी तो ब्रजभाषा के एकदम विपरीत प्रवृत्ति धारण करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

*. खड़ीबोली तथा हरियाणवी की विपरीत कारक प्रणाली रखती है।
अत: हिन्दी की विभिन्न बोलियों में पारस्परिक संबंध होने के साथ-2 विपरीत प्रणालियाँ भी है जो हिन्दी की विविधता को दिखाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation